विद्युत दर्पण

पक्षेविसमिति की गृह पत्रिका
वर्ष 2009
अंक - 12 अप्रैल - जून 2009

****

सम्पादकीय

वित्तीय वर्ष के आरम्भ के साथ ही कार्यालय में अनेक योजनाएँ, निर्णय अमल में आने लगते हैं । राजभाषा अनुपालन के संदर्भ में इसे देखें तो वर्ष 2009-10 के लिए कार्यालय में विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएँ लागू की गईं और वर्ष 2008-09 के दौरान लागू 05 प्रोत्साहन योजनाओं के लिए कुल 20 अधिकारियों / कर्मचारियों को पुरस्कार घोषित किए गए । सभी विजेताओं का हार्दिक अभिनन्दन!

राजभाषा नीति अनुपालन में हम इसी तरह आगे बढ़ते रहें, इसलिए हमें निरन्तर प्रयासरत रहना चाहिए । अप्रैल माह के साथ ही आरम्भ होता है 'वित्तीय' वर्ष जो कार्यालयीन दृष्टि से नये कार्यों का आरम्भ करता है और साथ ही शुरू होता है 'चैत्र' माह, जो भारतीय संस्कृति में अनेक समूहों का नव वर्ष लेकर आता है और इसके साथ विविध धार्मिक त्यौहारों का और शुभ कार्यों का भी आरम्भ होता है । इस तरह यह काल कर्तव्य और आनन्द के मिलाप का काल है । इसे ध्यान में रखते हुए हमें उत्साह के साथ अपना कर्तव्य निभाना चाहिए ।

आनन्दमय जीवन जीने के लिए स्वस्थ तन और स्वस्थ मन आवश्यक है । योग्य आहार-विहार से तन का स्वास्थ्य मिल सकता है तो उचित विचारों से मन का स्वास्थ्य प्राप्त किया जा सकता है । इस प्रकार स्वस्थ तन और मन के साथ हम अपने कर्तव्य अच्छी तरह निभा सकते हैं और कर्तव्यपूर्ति जैसा आनन्द शायद ही कहीं और मिले । तो आइये हम सभी अच्छे आहार-विहार और विचारों के साथ आनन्दमयी जीवन जीयें ।

शुभकामनाओं सहित ।

(मनजीत सिंघ)
सदस्य सचिव

चूं कि भारतीय एक होकर एक समन्वित संस्कृति का विकास करना चाहते हैं, इसलिए सभी भारतीयों का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वे हिन्दी को अपनी भाषा समझकर अपनाएँ ।

डॉ. भीमराव आम्बेडकर

समाचार दर्पण

- श्री एम.जी. गुप्ता, कार्यपालक अभियंता दिनांक 30 अप्रैल 2009 को अधिवर्षिता की आयु प्राप्त करने पर सेवा निवृत्त हुए । आपके स्वस्थ्य एवं सुखमय सेवानिवृत्त जीवन के लिए शुभकामनाएँ!
- श्री दीपक गवाली, सहायक निदेशक ने पक्षेविसमिति में दिनांक 4 जून 2009 को कार्यभार ग्रहण किया । पक्षेविसमिति परिवार में आपका स्वागत है ।
- श्री मोरेश्वर धकाते, कार्यपालक अभियंता ने दिनांक 3 अप्रैल 2009 को राजभाषा अधिकारी का कार्यभार सम्भाला ।

राजभाषा समाचार

- दिनांक 20.05.2009 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में ''कम्प्यूटर पर एक्सेल में कार्य'' विषय पर श्री मोरेश्वर धकाते, कार्य.अभि. ने व्याख्यान दिया। कुल 13 अधिकारी / कर्मचारी ने इस कार्यशाला का लाभ लिया ।
- राभाकास की तिमाही बैठक दिनांक 15.05.2009 को श्री प्रवीणभाई पटेल, सदस्य सचिव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई ।
- वर्ष 2009-2010 के लिए कुल 5 प्रोत्साहन योजनायें लागू की गईं ।
- वर्ष 2008-2009 के लिए कुल 5 प्रोत्साहन योजनाएँ लागू की गई थी । इन प्रोत्साहन योजनाओं के कुल 20 विजेताओं के पुरस्कार घोषित किये गए ।

जी वन है तो आनन्द है और परिश्रम है तो जीवन है ।

टॉलस्टाय

****

अपारंपरिक ऊर्जा स्त्रोत

के. आर. राय,
सहायक निदेशक

प्रकृति के गर्भ में छिपा है, असंख्य ऊर्जा का भण्डार ।
मानव दोहन में लगे हैं, खोज में जुड़े हैं, कल पुर्जा का संसार ।।

ऊर्जा न तो नष्ट होती है और न ही उत्पन्न की जा सकती है । ऊर्जा को सिर्फ परिवर्तित किया जा सकता है । विद्युत ऊर्जा सभी ऊर्जाओं का राजा है । इसके बटन दबाने से पल भर में सभी प्रकार के ऊर्जाओं में परिवर्तित किया जा सकता है । इसीलिए आधुनिक युग में विद्युत ऊर्जा का दैनंदिनी जीवन में अति महत्वपूर्ण आवश्यकता है । विद्युत ऊर्जा उत्पन्न करने के स्त्रोत दो प्रकार के हैं:-

(1) पारम्परिक ऊर्जा स्त्रोत - इसमें ईंधन, कोयला, तेल, गैस, पानी और परमाणु द्वारा उत्पादित विद्युत को पारम्परिक ऊर्जा स्त्रोत कहते हैं । अधिकांश संयंत्र तापीय होने के कारण कोयले का भण्डार 30-35 वर्ष के बाद खदान से कोयला निकल जायेगा । तब इसके उत्पन्न होने में खासी मुश्किल का सामना करना पड़ सकता है । देश में विद्युत ऊर्जा की मांग और उपलब्धि में 13 से 15% की कमी है । बिजली की मांग और पूर्ति के अनुपात को पूरा करने के लिए अन्य ऊर्जा स्त्रोत के शोध एवं अनुसंधान जारी है ।

(2) अपारम्परिक ऊर्जा स्त्रोत - प्रकृति के गोद में रह कर भी हम कुदरत के अनमोल खजाने से अनभिज्ञ हैं । वसुंधरा अपनी सोना, हीरा आदि खनिज़ सम्पदा को रख देती है । सच्चा जौहरी कनक और हीरे को तराश लेता है । आज के समय में कोई भी वस्तु बेकार नहीं है । सबकी अलग महत्व और अलग विशेषताएँ हैं । ''भारत गाँव का देश है जहाँ संस्कृति और सभ्यता बसती हैं'' भारत सरकार वर्ष 2012 तक गाँव के प्रत्येक घर, सड़क को बिजली से रोशन करेगी । इसके लिए ''राजीव गाँधी ग्रामीण विद्युतीकरण'' अभियान चला रही है जिससे देश के अंतिम व्यक्ति तक बिजली पहुँच सके । उनके ही आसपास के विभिन्न स्त्रोत और प्रणाली से बिजली के निर्माण हो रही है ।

(क) सौर ऊर्जा -

i. सौर फोटो वोल्टिज़ शक्ति से बिजली पैदा हो रही है ।

ii. सौर ऊर्जा से सड़क रोशनी प्रणाली -पहाड़ी गाँवों, कस्बों एवं दुर्गम स्थानों के सड़क को रोशन कर रही है ।

iii. सौर ऊर्जा से मकान रोशनी प्रणाली- जंगल पहाड़ों एवं दुर्गम स्थलों के निवासियों के घरों को रोशन कर रही है । सौर ऊर्जा लालटेन- गाँवों में पगडंडी एवं जंगली रास्तों में रात को जाने के लिए सौर ऊर्जा से चार्ज होने वाली लालटेन (40 वोल्ट के ट्यूब लाइट के समान रोशन करने वाली 10 - 12 घंटे तक लगातार जलने वाली लालटेन है । सौर ऊर्जा पावर संयंत्र- इससे विद्युत उत्पादन करने की अपार सम्भावनायें हैं । नागपुर के बूटीबोरी में 1000 मे.वा. के पावर संयंत्र का निर्माण हो रहा है ।

iv. सौर तापीय कार्यक्रम- सौर ऊर्जा से पानी गरम करने की प्रणाली मकान के छत पर इसके प्लेट या डिस्क लगाने से 24 घंटे गरम पानी मिलता है । सरकारी बंगले, कलेक्टर बंगले में अनिवार्यत: प्रयोग में लाया जा रहा है ।

v. बॉक्स सोलर कूकर- सोलर कूकर से खाना आसानी से पकाया जा सकता है ।

vi. कांसट्रेटिंग डिश कूकर एवं कम्यूनिटी सोलर कूकर - इस कूकर से पारिवारिक एवं सामुहिक भोज बनाने के प्रयोग में लाया जा सकता है ।

(ख) वायु ऊर्जा -

प्रकृति की हवा से पवन चक्की द्वारा विद्युत ऊर्जा का निर्माण किया जा रहा है ।

(ग) छोटा जलीय ऊर्जा (25 मे.वा. तक)-

छोटे-छोटे तलाबों, पोखरों, स्टाप डेम, झरनों में भी बिजली पैदा हो रही है । मुंबई के वीर, भटगर, भत्सा, तानसा, वैतरणा, पानसेट इत्यादि में छोटा जलीय ऊर्जा संघारित्र है ।

(घ) बायो मास ऊर्जा -

चावल की भूसी, गन्ने के छिलके (बगाज़) से भारी मात्रा में बिजली पैदा की जा रही है । नगरपालिका के ठोस कचड़े एवं नगरपालिका के सीवेज़ वेस्ट, गोबर गैस इत्यादि से बिजली संयंत्र स्थापित हो रहे है । हैदराबाद, विजयवाड़ा, मुंबई, दिल्ली जैसे मेट्रो शहर मेंम कचरा उठाने के लिए होड़ लगी है । बेकार प्लास्टिक से भी बिजली पैदा की जा रही है । नागपुर के बूटीबोरी में इसका संयंत्र स्थापित है । अपारंपरिक ऊर्जा से बिजली पैदा करने के नायाब तरीकों से देश की ईंधन, खदान, परिवहन इत्यादि के संरक्षण कर रहे हैं और बिजली के अधिकतम कमी को दूर करता है जो देश के कुल स्थापित विद्युत संघारित्र के 6% तक सभी स्त्रोतों की पूर्ति करता है ।

****

गुरूवाणी

श्री गुरू नानक देव जी के माताजी एवं पिताजी ने गुरूजी की बाल्य अवस्था में जनेयु रस्म अदायगी के लिए पंडित जी को अनुष्ठान करने के लिए घर आमंत्रित किया । पूजा होने के उपरांत जब गुरूजी को जनेयु डालने के लिए बिठाया गया और जनेयु जैसे ही उनके गले में डालने लगे तो उन्होंने उसे रोकते हुए पंडितजी से निम्नलिखित पंक्तियाँ कहीं:

दया कपाह, संतोख सूत जत,
गंडी सतॅ वटॅ,
इह जनेयु जी का हई न पांडे घॅत,
न ईह तुटे न मल लागे,
न ईह जले न जाये,
धन सो माणस नानका जो गल चले पाये ।

अर्थात

जिस कपास में दया है और उसका सूत सबर/ संतुष्टि वाला है, उसमें जो गांठ डाली गई है वो सच की है, तो पंडित जी मेरे को ऐसा जनेयु जरूर डालो क्योंकि ऐसा जनेयु न कभी टूटेगा न गंदा ही होगा, इस संसार को त्यागने के समय न इसमें आग लगेगी न मेरे से कभी यह अलग होगा, गुरू नानक देव जी कहते हैं कि वो मानुस धन्य है जिसके गले में ऐसा सच्चा जनेयु डाला जायेगा ।

भावार्थ यह है कि हम जब भी कोई रस्म या रीति रिवाज निभाते हैं तो सिर्फ फर्ज ही पूरा न करें, उसका अर्थ समझें और उसे अपने जीवन में लागू करें ।

संकलन- श्रीमती कुलदीप कौर